150th Birth Anniversary of Acharya Jawahar Lal

Acharya Jawahar Lal was a great saint and preacher of *Rashtradharma* (national duty). He was born in Thandala (Madhya Pradesh) on 2nd November, 1875. His mother, Nathibai passed away when he was two, and his father, Jeevraj Kavad, died when he was five. He then lived with his maternal uncle, Moolchand Dhoka, who also passed away when he was thirteen. These events deepened his spiritual inclination. At the age of 16, he accepted Jain initiation from Muni Maganlal; and at 42 years of age, he became Yuvacharya of the Shvetambara Sthanakavasi Sadhu Marg Jain Sangh, and around 44 years, he assumed the position of Acharya.

A profound scholar of the Jain Agamas, Acharya Jawahar Lal drew on texts where Bhagwan Mahavira opposed casteism and preached equality, liberty & humanity, thereby calling duty towards village, city, and nation as *Dharma*. The Thananga Sutra (in classical Prakrit) mentions Gramdharma, Nagardharma, and Rashtradharma—references that served as catalysts for the freedom movement. Acharya Jawahar interpreted these Agamic sutras in contemporary style. On national duty, he taught that for the sake of religion, the nation and nationalism must be protected. He was well-versed beyond Jain scriptures—in the Upanishads and the Gita which he quoted widely leaving listeners spellbound.

As a social reformer, Acharya Jawahar Lal advocated eradicating misconceptions, evils, and rigid traditions. He vehemently denounced caste discrimination and untouchability, while also criticizing various social evils such as child marriage, unequal or mismatched marriages, and the practice of treating marriage as a commercial transaction involving the sale of the bride or groom. He viewed the freedom movement as a medium not only for political liberation but also for cultural awakening, eradication of social evils, Swadeshi, self-reliance, and de-addiction. He wore khadi himself, and encouraged its adoption within his monastic community. Inspired by his nationalism and the power of his discourses, many national leaders and freedom fighters sought his company.

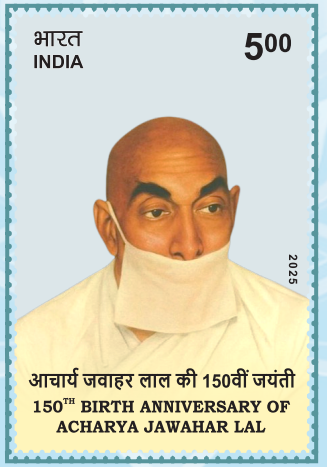
He attained nirvana on 10th July, 1943 at approximately 68 years of age, in Bhinasar (near Bikaner), Rajasthan. Department of Posts is pleased to mark his 150th birth anniversary with a Commemorative Postage Stamp.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/
Cancellation Cachet : Ms. Ravneet Kaur
Text : Based on information provided by Jaskaran Bothra Foundation, Mumbai.

भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा
India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

डाक विभाग
Department of Posts



विवरणिका BROCHURE

आचार्य जवाहर लाल की 150वीं जयंती

महान संत और राष्ट्रधर्म के प्रखर प्रचारक आचार्य जवाहर लाल का जन्म 2 नवंबर, 1875 को थांदला (मध्य प्रदेश) में हुआ। दो वर्ष की अल्पायु में मां नथीबाई और पांच वर्ष की आयु में पिता जीवराज कवाड़ को खो देने के बाद, वे अपने मामा मूलचंद के साथ रहने लगे। दुर्भाग्यवश, जब तेरह वर्ष के हुए तो उनके मामा का भी निधन हो गया। इन घटनाओं ने अध्यात्म के प्रति उनके रुझान को और भी प्रगाढ़ कर दिया। तत्पश्चात, तरुण जवाहर लाल ने 16 वर्ष की आयु में, मुनि मगनलाल से जैन दीक्षा ग्रहण की। लगभग 42 वर्ष की आयु में, वे श्वेताम्बर स्थानकवासी साधु मार्ग जैन संघ के युवाचार्य बने और लगभग 44 वर्ष की अवस्था में उन्हें आचार्य की पदवी प्राप्त हुई।

आचार्य जवाहर लाल ने अपने उपदेशों में उन ग्रंथों को मुख्य रूप से उद्धृत किया, जिनमें भगवान महावीर के जातिवाद विरोधी और समानता, स्वतंत्रता तथा मानवता संबंधी उपदेश निहित थे। उन्होंने गांव, नगर तथा राष्ट्र के प्रति कर्तव्य को धर्म बताया। ठाणांग सूत्र (शास्त्रीय प्राकृत) में ग्रामधर्म, नगरधर्म और राष्ट्रधर्म का उल्लेख किया गया है। इन सूत्रों ने स्वतंत्रता आंदोलन में उत्प्रेरक का काम किया। आचार्य जवाहर ने इन आगमिक सूत्रों की समकालीन शैली में व्याख्या की। राष्ट्रधर्म पर चर्चा करते हुए उन्होंने विचार प्रस्तुत किया कि धर्म की रक्षा के लिए राष्ट्र और राष्ट्रवाद दोनों की रक्षा की जानी चाहिए। आचार्य जवाहर लाल न केवल जैन धर्मग्रंथों बल्कि उपनिषदों और गीता के भी प्रकांड विद्वान थे। वे प्रायः इन ग्रंथों से व्यापक रूप से उद्धरण प्रस्तुत कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते थे।

समाज सुधारक के रूप में, आचार्य जवाहर लाल ने मिथ्या–धारणाओं, कुरीतियों और रूढ़ियों के उन्मूलन की वकालत की। उन्होंने जातिगत भेदभाव और छुआछूत की कड़ी निंदा की, साथ ही बाल विवाह, असमान या बेमेल विवाह जैसी विभिन्न सामाजिक बुराइयों की भी आलोचना की, तथा विवाह को एक वाणिज्यिक लेन–देन के रूप में देखने की प्रथा की भी आलोचना की, जिसमें वर या वधू की बिक्री शामिल थी। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन को न केवल राजनीतिक मुक्ति, बल्कि सांस्कृतिक जागरण, सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन, स्वदेशी, स्वावलंबन और नशामुक्ति का भी माध्यम माना। उन्होंने स्वयं खादी पहनी और अपने संन्यासी समुदाय को भी इसे अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। उनके प्रखर राष्ट्रवाद और उनके प्रेरक प्रवचनों से प्रभावित होकर, कई राष्ट्र नायकों और स्वतंत्रता सेनानियों ने उनसे भेंट की।

उन्होंने 10 जुलाई, 1943 को लगभग 68 वर्ष की आयु में भीनासर (बीकानेर के निकट), राजस्थान में निर्वाण प्राप्त किया। डाक विभाग आचार्य जवाहर लाल की 150वीं जयंती पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :
डाक–टिकट, प्रथम दिवस आवरण, विवरणिका,
विरूपण कैशे : सुश्री रवनीत कौर
पाठ : जसकरण बोथरा फाउंडेशन, मुंबई के द्वारा दी गई जानकारी पर आधारित।

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्य Denomination	: :	500 पैसे 500p
मुद्रित डाक टिकटें Stamps Printed	: :	304560 304560
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: :	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	: :	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamps, Miniature Sheets, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00